In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

हि. 339

-1120-

पज विकासमाला

[illegible]

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmand

In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding:

ity, Balmeeki Campus, Kathmand

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला : १२४

विनोबा के पावन प्रसंग

आचार्य विनोबा के जीवन की महत्त्वपूर्ण घटनाएं

हि ३३१
१३००

लेखक
सुरेश राम

संपादक
यशपाल जैन

पुस्तक भेंट के निमित्त है

१९६१
सस्ता साहित्य मंडल-प्रकाशन

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

प्रकाशक
मार्तण्ड उपाध्याय
मंत्री, सस्ता साहित्य मंडल
नई दिल्ली

दूसरी बार : १९६१
मूल्य
पैंतीस नये पैसे

मुद्रक
नेशनल प्रिंटिंग वर्क्स,
दिल्ली

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला

हमारे देश के सामने आज सबसे बड़ी समस्या करोड़ों आदमियों की शिक्षा की है। इस दिशा में सरकार की ओर से यदि कुछ कोशिश हो रही ह तो वह काफी नहीं है। यह बड़ा काम सबकी सहायता के बिना पार नहीं पड़ सकेगा।

बालकों तथा प्रौढ़ों की पढ़ाई की तरफ जबसे ध्यान गया है, ऐसी किताबों की मांग बढ़ गई है, जो बहुत ही आसान हों, जिनके विषय ोचक हों, जिनकी भाषा मुहावरेदार और बोलचाल की हो और जो मोटे टाइप में बढ़िया छपी हों।

यह पुस्तक-माला इन्हीं बातों को सामने रखकर निकाली गई है। इसमें कई पुस्तकें निकल चुकी हैं। इन सबकी भाषा बड़ी आसान है। विषयों का चुनाव बड़ी सावधानी से किया गया है। छपाई-सफाई के बारे में भी विशेष ध्यान रखा गया है। हर किताब में चित्र भी देने की कोशिश की है।

यदि पुस्तकों की भाषा, शैली, विषय और छपाई में किसी सुधार की गुंजाइश मालूम हो तो उसकी सूचना निस्संकोच देने की कृपा करें।

दूसरा संस्करण

बड़े हर्ष की बात है कि इस पुस्तक का दूसरा संस्करण इतनी जल्दी प्रकाशित हो रहा है। इस माला की सभी पुस्तकें पाठकों को पसंद आ रही हैं, इससे हमें बड़ा आनंद होता है। हमें विश्वास है कि इन उपयोगी पुस्तकों को पाठक चाव से पढ़ेंगे और इनके प्रचार में हाथ बटायंगे।

—मंत्री

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पाठकों से

विनोबाजी के नाम से और उनके काम से अब तो सारा देश परिचित हो गया है, फिर भी कम ही लोग हैं, जो यह जानते हैं कि बचपन से ही उनका जीवन किस प्रकार का रहा है। इस पुस्तक में ऐसे बहुत-से प्रसंग दिये गए हैं, जिनसे पता चलता है कि विनोबा में शुरू से ही सेवा की लगन थी और वह बराबर ऐसे काम करते रहे हैं, जो कोई भी मामूली आदमी नहीं कर सकता।

'भूदान-यज्ञ' के द्वारा अब विनोबाजी ऐसा समाज बनाने की कोशिश कर रहे हैं, जिसमें सब लोग प्रेम से रहें, मिल-जुलकर काम करें और सबका जीवन सुखी हो।

इस पुस्तक को पढ़कर आपको पता चलेगा कि आदमी अपने कामों से महान् बनता है।

—सम्पादक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विनोबा के पावन प्रसंग

"बाबा, हम बहुत दुःखी हैं। हमारी मदद कीजिये।"

"कहिये, क्या चाहते हैं!"

"बच्चों की गुजर-परवरिश का कुछ सिलसिला लगना चाहिए।"

"तो क्या किया जाय?"

"हम लोग अनपढ़ हैं, हरिजन हैं। खेती के सिवा दूसरा काम जानते नहीं। उसीका कुछ ठिकाना लगवा दें तो बड़ी दया हो।"

"खेती-किसानी के लिए क्या चाहते हैं?"

"थोड़ी जमीन हमें मिल जाय।"

"कितनी?"

"कोई अस्सी एकड़ इस गांव के सब हरिजनों के लिए काफ़ी होगी।"

"अस्सी एकड़ से काम चल जायगा?"

"हां, बाबा।"

थोड़ी देर बाद गांव के छोटे-बड़े, गरीब-अमीर सबको बाबा ने बुलाया। कहा—"यहां के हरिजनों को अस्सी एकड़ जमीन चाहिए। क्या आप लोग दे सकते हैं?"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"एक भाई खड़े हो गये, "हां, बाबा ! मैं अपने पिता की याद में सौ एकड़ जमीन देने को तैयार हूं।"

"खुशी से देते हैं ?"

"जीहां, बहुत खुशी से। मैं इसका कागज भी लिखकर दे दूंगा।"

कमाल होगया ! ऐसा न कभी देखा था न सुना था। दान-धर्म के रूप में मन्दिर-मस्जिद के लिए जमीन दी जाती है। स्कूल-कालेज के लिए दी जाती है। धर्म-शाला के लिए दी जाती है। लेकिन खेती करने के लिए और हरिजनों के लिए जमीन, यह पहली बार दी गई।

बाबा ने मन में सोचा--अगर प्रेम से यह काम एक गांव में हो सकता ह तो हिन्दुस्तान के सब गांवों में भी हो सकता है। इसी श्रद्धा के साथ वह निकल पड़े। वह १८ अप्रैल, १९५१ का दिन था। तबसे वह लगातार पैदल घूम रहे हैं। गांव-गांव जाकर वह प्रेम की बात कहते हैं, प्रेम से हर जगह समझाते हैं--अपने आपस के मामले आपस के सवाल, हमें राजी-खुशी से, मेल-समझौते से, प्रेम से आप ी तय कर लेने चाहिएं।

इन बाबा का नाम है विनोबा। उनकी कुछ बातें आगे पढ़िये।

... ...

विनोबा पर उनकी माता रुक्मिणीबाई का बड़ा भारी असर पड़ा है। वह अपनी मां की पहली संतान

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हैं। उनके दो छोटे भाई हैं।

विनोबा की मां बड़ी धर्म-परायण थीं। वह इनसे कहा करती थीं, "विन्या, जो देता है वह देव है। जो रखता है वह राक्षस।"

घर में कोई नई चीज पकातीं तो पहले मुहल्ले के लोगों के घर विन्या के हाथ भिजवा देतीं। उसके बाद जो बचता, सो घर के काम आता। कभी-कभी ऐसा भी होता कि चीज बचती ही नहीं। सारी-की-सारी बंट जाती। पर मां को उससे खुशी ही होती। इस तरह बांटकर खाने की आदत मां ने अपने बेटे में बचपन से ही डाल दी।

... ...

विनोबा के घर के लोग और नाते-रिश्तेदार उस दिन की राह देखते थे जब विनोबा की शादी होगी और यह घर-गिरस्ती चलायेंगे। इनकी माता कहतीं, "विन्या, उत्तम गृहस्थ का जीवन बिताने पर पितृ-ऋण चुक जाता है; लेकिन उत्तम ब्रह्मचर्य के पालन से चालीस पीढ़ियां तर जाती हैं।"

इससे विनोबा को ब्रह्मचर्य की प्रेरणा मिली। उन्होंने विवाह नहीं किया। वह बाल-ब्रह्मचारी हैं। इस समय उनकी उम्र तिरेसठ साल की है।

... ...

दसवां दर्जा पास करके विनोबा इन्टर में पढ़ने लगे।

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus. Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इम्तहान देने बम्बई जाना था। लेकिन रास्ते में सूरत स्टेशन पर उतर पड़े और पढ़ाई छोड़ देने का फैसला किया। काशी की तरफ निकल गये। किसीने पूछा, "कहां जाते हो?" इन्होंने कहा "काशी।" उसने पूछा, "वहां क्या करोगे?" बोले, "वेद-उपनिषद पढ़ेंगे। ब्रह्म की खोज में हैं।"

काशी पहुंचे। वहां एक बड़ा भंडारा चलता था। विनोबा दोपहर को वहीं खाते। लेकिन इतनी भीड़ होती थी कि खाना परोसने में एक घंटा लग जाता था। इस एक घंटे में विनोबा गीता का पाठ करते। इस तरह पूरी गीता इन्हें याद हो गई।

खाने के बाद दो पैसे दक्षिणा के मिलते। उससे उनका शाम का काम चल जाता। एक पैसे की आध सेर शकरकन्द लेते और एक पैसे का पावभर दही। उसीसे पेट भर जाता और मौज से संस्कृत पढ़ते थे।

... ...

इनकी माता को संतों के भजन बहुत याद थे। वह काम करते-करते अक्सर भजन गाती रहतीं और विनोबा को भी सुनातीं। विनोबा को भी वे भजन याद हो जाते थे। दोनों में धर्म की खूब चर्चा होती। कभी-कभी तो माता उसमें इतनी लीन हो जातीं कि दाल और साग में नमक तक डालना भूल जातीं। विनोबा बड़े प्रेम से खाना खा लेते, लेकिन छोटा भाई शिकायत

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

करता—"मां, आज दाल में नमक नहीं डाला है ?" इसपर विनोबा कहते, "अरे, तुझे भोजन से मतलब

"नमक न रहने से तेरी साधना में कौन कमी आगई ?"

है या नमक से ? नमक न रहने से तेरी साधना में कौन कमी आ गई ।"

... ...

विनोबा की मां अपनी रसोई बनाकर पड़ोस के हारी-बीमारी के घर में जाकर मदद करतीं, रसोई बना आतीं । विनोबा ने एक दिन उनसे कहा, "मां, यह तो स्वार्थ है कि पहले अपनी रसोई पका लेती हो, फिर बाद में दूसरों की रसोई करती हो ।"

मां ने जवाब दिया, "अरे, विन्या ! यह स्वार्थ नहीं

Nepal Sanskrit University. Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

है। अपने घर तो जल्दी उठकर बना लेती हूं। दूसरे के घर इतने तड़के जाऊंगी तो उनको असुविधा होगी। फिर जल्दी रसोई बना आऊंगी तो लोगों को ठंडा खाना मिलेगा।"

... ...

घर पर कोई भी मांगनेवाला आता, विनोबा की माताजी उसे चुटकी भर आटा या कुछ-न-कुछ जरूर दे देतीं। एक दिन विनोबा ने कहा, "मां, धर्म की किताबों में लिखा है कि दान सुपात्र, कुपात्र देखकर देना चाहिए। कुपात्र को कभी न दे, सुपात्र को दे।"

माता ने जवाब दिया, "विन्या, मैं तो जो आता है, उसे नारायण समझकर देती हूं। मैं यह फैसला करनेवाली कौन हूं कि जो आया है वह पात्र है या अपात्र है या कुपात्र! मैं तो कृष्णार्पण करती हूं।"

... ...

विनोबा अपनी माता को गीता के श्लोक अक्सर सुनाया करते थे। गीता की बातें करते रहते थे। माता ने कहा, "तू 'गीता-गीता' की रट लगाता रहता है। लेकिन संस्कृत के श्लोक मेरी समझ में नहीं आते। क्या मराठी में कोई गीता नहीं है, रे?"

गीता का एक मराठी का अनुवाद विनोबाजी ने माता को लाकर दिया। लेकिन वह भी कठिन था और ठीक-ठीक समझ में नहीं आता था। तब विनोबा ने गीता के

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बीस-पच्चीस श्लोक छांटकर माताजी को दिये।

एक दिन माताजी बोलीं, "विन्या, तू तो गीता जानता है। तब इसका मराठी में अनुवाद क्यों नहीं कर देता ?"

यह बात विनोबा के दिल में बैठ गई और पंद्रह साल बाद, १९३० में उन्होंने 'गीताई' नाम से गीता का मराठी में अनुवाद किया। आज 'गीताई' महाराष्ट्र में घर-घर चलती है।

... ...

एक दिन मां रोटी सेक रही थीं। विनोबा चूल्हे के पास जा बैठे। उनके हाथ में गोल किये हुए कुछ कागज थे। विनोबा ने उसका एक सिरा आग में दिखाया। कागज जलने लगा।

मां ने पूछा, "विन्या, क्या कर रहा है ?"

जवाब मिला, "मां, कुछ नहीं ! स्कूल के अपने सार्टिफिकेट हैं। इन्हें अग्नि देवता की भेंट कर रहा हूं।"

"अरे, तेरे पास पड़े रहते तो क्या हर्ज था ?"

"मां, जब इनसे काम नहीं लेना, तो इन्हें अपने पास रखना ही क्यों ?"

विनोबा ने बहुत-सी कविताएं लिखी थीं। वे सब उन्होंने काशी में गंगा-किनारे बैठकर गंगाजी को भेंट कर दीं।

बड़े होने पर जब विनोबा देश में घूमे तो इन्हें

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

जगह-जगह मान-पत्र मिले। एक पूरी पेटी भर गई। वे सारे मान-पत्र एक दिन गोदावरी में बहा दिये।

... ...

काशी से विनोबा सीधे महात्मा गांधी के पास चले आये। साबरमती-आश्रम में रहने लगे। कुछ दिन बाद विनोबा ने एक साल की छुट्टी ली। महाराष्ट्र में जाकर संस्कृत पढ़ी और धार्मिक ग्रन्थों का मनन किया। ठीक एक साल बाद वह लौट आये। वही तारीख, वही समय। बापू को तो ध्यान भी नहीं रहा था। विनोबा को देखकर वह बहुत खुश और चकित हुए। इसकी याद करते हुए एक दिन बापू ने विनोबा से कहा—"उस घटना से तुम्हारी सत्य-निष्ठा का पता चलता था।"

विनोबा ने झट उत्तर दिया, "नहीं, वह तो गणित में निष्ठा का प्रमाण था।"

कहने की जरूरत नहीं कि विनोबा को गणित बहुत प्रिय है।

... ...

बापू को मालूम हुआ कि विनोबा अपने माता-पिता को खबर दिये बिना आश्रम में आगये हैं। उन्होंने उनके पिताजी को पत्र भेजा :

"आपका, चिरंजीव विनोबा मेरे साथ है। इतनी कम उमर में उसने जो वैराग्य और भगवत्-निष्ठा प्राप्त कर ली है, उसे हासिल करने में मुझे तो कई

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

बरस लगातार मेहनत करनी पड़ी थी।"

विनोबा का नाम विनायक नरहरि भावे था। बापू ने 'विनोबा' कर दिया। तबसे वह इसी नाम से जाने जाते हैं।

सन् १९१८ में देश-भर में महामारी बहुत जोर से फैली। विनोबा के माता-पिता और भाई (चौथा) भी बीमार पड़े। उनकी बीमारी का समाचार पाकर बापू ने विनोबा को उनके पास भेज दिया। भाई चल बसा। पिताजी अच्छे होगये। तीन दिन बाद माताजी का भी बिछोह होगया।

विनोबा ने कहा कि माताजी का दाह-संस्कार मैं करूंगा और वेद-पाठ करूंगा, पंडितों की जरूरत नहीं। पिताजी नहीं माने और बोले, "कुल की रीति का पालन करना होगा।"

लेकिन विनोबा अडिग रहे। पिताजी भी अटल रहे। आखिर उन्होंने कुल की रीति के अनुसार सब क्रिया-कर्म किये। विनोबा उसमें शामिल नहीं हुए। घर पर ही गीता तथा वेद का पाठ करते रहे और फिर आश्रम लौट आये। पाठकों को पता होगा कि विनोबा अपनी मां को बहुत चाहते थे।

... ...

गरमी के दिन थे। आम का मौसम था। फल अभी पके नहीं थे। एक दिन जोर की आंधी आई। कच्चे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

आम सैकड़ों-हजारों की तादाद में झड़ गये। गरीबों का बेहद नुकसान होगया। जो आम फूट गये वे तो बेकार होगये; जो साबित बचे, उन्हें टोकरों में भरकर बेचने निकल पड़े।

एक किसान अपनी टोकरी लेकर आश्रम आया। कोई राहगीर मिल गया। पूछा, "क्या दाम हैं इसके?"

"भैया! वैसे तो हर साल टोकरी तीन रुपये में जाती थी। आप जो दे दें।"

"तीन रुपये? होश में भी है कि नहीं? अभी

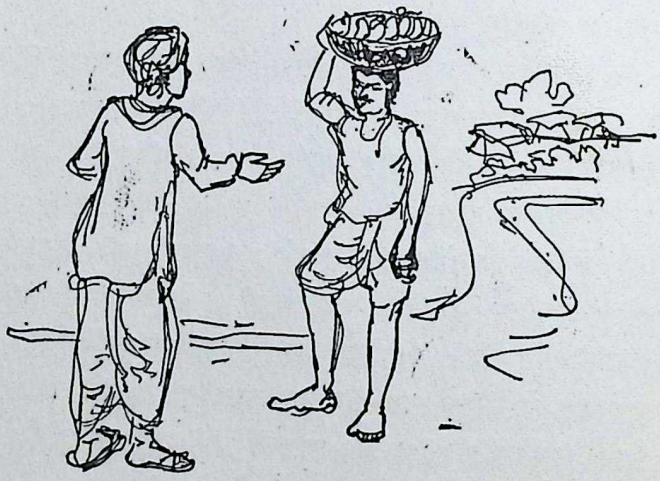

"होश में भी है कि नहीं?"

बाजार से चला आ रहा हूं। सैकड़ों टोकरी आई हुई हैं। रुपये-रुपये को कोई नहीं पूछता।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"बहुत नुक़सान हुआ है। आप जो ठीक समझें दे दें।"

"देना हो तो एक रुपये में दे।"

"कुछ और बढ़ा दें। बड़ा घाटा पड़ा है।"

गाहक ने सवा रुपया दिया और टोकरी खाली करा ली।

किसान घर जाने लगा। सामने विनोबा की झोंपड़ी पड़ी। विनोबा ने पूछा, "सब आम बिक गये दीखते हैं?"

उसने कहा, "क्या कहें, सवा रुपया मिला।"

"सवा रुपया! वैसे दाम कितने होने चाहिए थे?"

"हर दफे तो तीन रुपये टोकरी जाती थी, लेकिन आंधी के कारण सारे आम झड़ गये और भाव गिर गया।"

"लेकिन तुमने इतने सस्ते दिये ही क्यों?"

"तो फिर क्या करता? न देता तो टोकरी वापस ढोनी पड़ती। जितना पाया, उतना ही सही।"

विनोबा ने उसके तीन रुपये पूरे कर दिये और आश्रम के एक साथी से कहा, "तुम्हारा क्या खयाल है? जब यह किसान संकट में है तो इसके दुःख में हाथ बंटाने की बात सूझनी चाहिए, या लूटने की?"

"दुःख बंटाना चाहिए।"

"लेकिन आज के पूंजीवादी समाज में ऐसी लूट हर दिन चलती है। हमें इसका भान तक नहीं रहा है।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

इसी कारण से देश में दुःख है, गरीबी है, असन्तोष है।"

... ...

बारह बरस वर्धा-आश्रम में रहकर, विनोबा नालवाड़ी (महिला-आश्रम से एक मील पर) आ गये। वर्धा जिले के देहात में काम शुरू किया। महीने में पांच दिन आश्रम में रहते, पच्चीस दिन देहात में। 'ग्राम-सेवा-मंडल' नाम की नई संस्था खोली, जो अब भी चलती है।

यहां उन्होंने तकली पर सूत कातने का अभ्यास किया। एक प्रयोग यह करने लगे कि कताई से जितनी मजदूरी होगी, उतने का ही खायेंगे। दिनभर में आठ घंटे मेहनत करने पर साढ़े तीन आने की कमाई होती। उसीमें विनोबा गुजर करते। नतीजा यह हुआ कि वह दुबले होते चले गये और वजन ११५ से घटकर ९५ पौण्ड रह गया।

जब यह बात बापू को मालूम हुई तो उन्होंने कहा, "अब तुम्हारी चिन्ता मुझे करनी पड़ेगी।"

बापू सोचने लगे कि तन्दुरुस्ती ठीक करने के लिए विनोबा को किसी पहाड़ी जगह पर भेजा जाय। कई सुझाव मित्रों ने दिये--शिमला, मसूरी, महाबलेश्वर आदि-आदि। बापू ने विनोबा से कहा, "जहां तुम्हारी इच्छा हो, वहां चले जाओ।"

"बापू, मैंने अपने लिए स्थान खोज लिया है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विनोबा ने जवाब दिया।

"कहां ?"

"यहीं, पवनार गांव में (वर्धा से चार मील दूर) नदी के उस पार टेकड़ी पर जो मकान है,वहीं रहूंगा।"

"जैसी इच्छा।"

विनोबा वहां जाकर रहने लगे। उसे परमधाम-आश्रम नाम दिया। वहां तीन महीने के अन्दर उनका वजन पैंतीस पौंड बढ़ गया।

... ...

सन् १९३९ में दूसरा महासमर छिड़ गया। अंग्रेजों ने जबरदस्ती हिन्दुस्तान को भी उसमें शामिल कर दिया। हिन्दुस्तान यह कैसे मान सकता था ? अपना विरोध दिखाने के लिए कांग्रेस ने सत्याग्रह करने का फ़ैसला किया।

बापू का ध्यान विनोबा की ओर गया। वह परम-धाम जाकर विनोबा से मिले, अपनी बात बताई, फिर पूछा, "क्या तुम सत्याग्रही बनने को राजी हो ?"

"जीहां।"

"तो तैयारी में कितना समय लगेगा ? तुम्हारे हाथ में जो काम हैं, उनसे फुर्सत पालो।"

विनोबा ने कहा, "मुझे कुछ भी समय नहीं लगेगा। जब आप कहें तैयार हूं। मेरे लिए आपकी आज्ञा और यमराज की आज्ञा एक समान है। जिस समय आप

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

हुकुम करें, सेवक तैयार है।"

दूसरे दिन सारे देश के सामने विनोबा पहले सत्याग्रही के रूप में आये।

... ...

सन् बयालीस की गर्मियों के दिन थे। बापू ने अंग्रेजी शासन से कहा, "यहां से चले जाओ।" 'भारत छोड़ो' की आवाज उठते ही देशभर में धूम मच गई। आजादी के लिए एक बहुत बड़ा आन्दोलन छेड़ने की योजना बनी। बापू ने सोचा, इसकी शुरूआत उपवास से करनी चाहिए। अपने निकट के मित्रों और आश्रम के साथियों से सलाह की तो सबने कहा कि उपवास करना ठीक नहीं होगा। लेकिन बापू के मन में उपवास की बात जड़ पकड़ रही थी। किसी ने सुझाया कि विनोबा को बुलाकर उनकी राय ली जाय।

विनोबा बुलाये गए। सब बात बताई गई। फिर पूछा गया, "आपकी क्या राय है?"

विनोबा ने फौरन जवाब दिया, "ऐसा बलिदान तो अहिंसा की मर्यादा में आता है।"

इसके बाद मुस्कराते हुए बोले, "और जो काम राम ज्ञानपूर्वक कर सकता है, वह काम हनुमान श्रद्धापूर्वक कर सकता है।"

गांधीजी ने कहा, "अगर चाहो तो दो-चार दिन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विचार करने के बाद राय दे देना।"

विनोबा ने कहा, "आखिर इसमें विचार क्या करना है। बात साफ है। मैं आपसे सहमत हूं।"

सुनकर सब घबड़ा गये। जब विनोबा की राय बापू से मिल गई तो बापू को उनके इरादे से कौन हटा सकता था।

अगस्त का महीना आया। कांग्रेस की बैठक हुई। 'भारत छोड़ो' का प्रस्ताव पास हुआ। दूसरे दिन सवेरे ही बापू और दूसरे नेता पकड़े गये। विनोबा को भी आश्रम में गिरफ्तार कर लिया गया।

जेल पहुंचते ही उन्होंने जेलर से कहा, "आज हमारा भोजन आश्रम में हो चुका है। कल सुबह से उपवास शुरू होगा।"

जेलर परेशानी में पड़ा। पूछा, "बात क्या है? ऐसी यहां क्या बात हुई है, जो आपने यह कदम उठाने की ठानी है?"

"यहां जेल में कुछ नहीं हुआ। लेकिन इस बार बापू ने आंदोलन उपवास के साथ आरम्भ करने का सोचा था। उन्होंने उपवास शुरू किया होगा, मुझे भी वही करना है।"

जेलर चुप होगया।

बापू को इस बात का पूरा ध्यान था। वह जानते थे कि विनोबा जेल जाते ही उपवास शुरू कर देंगे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लेकिन उन्होंने पहले यह जरूरी समझा कि सरकार से चिट्ठी-पत्री करूं और उपवास बाद में। इसलिए जेल पहुंचते ही बापू ने विनोबा को सूचना भिजवाई कि उपवास अभी नहीं कर रहा हूं, आगे तुम्हें खबर करूंगा।

तब विनोबा ने जेलर को सूचना दे दी कि हम भी अभी उपवास नहीं करेंगे।

... ...

स्वराज्य होने के बाद अपनी सरकार ने देश की बागडोर हाथ में ली। देखा कि अनाज की कमी है। सरकार की तरफ से जाहिर किया गया कि अनाज की पैदावार बढ़ानी चाहिए। अपने देश में फी एकड़ उपज बहुत कम है। अगर वह बढ़ जाय तो बाहर से गल्ला न मंगाना पड़े।

यह जानकर विनोबा ने अपने परमधाम-आश्रम में खेती का काम शुरू किया। खेती में वह बैल तक का उपयोग नहीं करते थे, यानी जुताई आदि के सारे काम आदमियों के द्वारा होते थे, यहां तक कि सिंचाई के वास्ते जो रहट चलता था उसमें भी बैल काम में नहीं लाये जाते थे। आश्रम के भाई-बहन ही उसे आनन्द के साथ खींचते थे।

रहट चलाते समय प्रार्थना होती थी। गीत-भजन होते थे।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

आश्रम की जरूरत की साग-भाजी वहीं पैदा होने लगी। जो बचती, उसे गांव के लोगों को बांट देते।

... ...

१८ अप्रैल, १९५१ को बिनोबा को पहला भूदान मिला।

दूसरे दिन वह आगे बढ़े, रास्ते में एक गांव मिला। वहां के लोगों ने उनका स्वागत किया और कहा, "आप थोड़ा ठहर जायं और कुछ नाश्ता कर लें।"

"क्या नाश्ता मिलेगा?" विनोबा ने पूछा।

"दूध-फल, जो आप चाहें।"

"नहीं, हमें कुछ और ही चाहिए।"

"आपके लिए क्या कमी है, जैसा कहें।"

"अपने गांव के भूमिहीनों के वास्ते आप कुछ जमीन हमें दें।"

यह सुनकर पल-भर के लिए गांव के लोग हैरान हुए कि क्या करें। लेकिन थोड़ी ही देर में एक भाई ने कहा, "पच्चीस एकड़ जमीन तो हम दे सकते हैं।"

विनोबा ने खुशी से उसे स्वीकार किया। कल और आज, दोनों दिन के दान से उनका मन पक्का होगया और भूदान-यज्ञ का शंख बजा दिया।

... ...

विनोबा एक गांव में पहुंचे। बहुत-से लोग जमा होगये। उनमें से एक भाई के कन्धे पर हाथ रखकर

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

पूछा, "आपके परिवार में कौन-कौन हैं ?"

"माताजी हैं, पत्नी हैं और पांच लड़के हैं।"

"जमीन कितनी है ?"

"साठ एकड़। उसीसे गुजर चलती है।"

"इसमें से हमें क्या मिलेगा ?"

वह भाई चुप।

"आप हमें अपना छटा लड़का मान लीजिये और छठा हिस्सा दे दीजिये।"

"बहुत ठीक ! मैं दस एकड़ जमीन देता हूं।"

... ...

आधी रात बीत चुकी थी। विनोबा का पड़ाव गांव के छोटे-से स्कूल में था। अपने पोते के सहारे, लाठी टेकता-टेकता रामचरन नाम का एक बूढ़ा स्कूल के पास आया। सब सो रहे थे। संयोग से एक भाई पेशाब करने उठे।

आहट सुनकर बूढ़े ने उन भाई को पास बुलाया और पूछा, "सुना है कि इस गांव में कोई बाबा आया है, जो गरीबों के लिए जमीन का दान लेता है। मेरे पास बारह बीघे जमीन है, मैं उसे देना चाहता हूं।"

"आपके पास गुजर-बसर का और कोई साधन है ?"

"नहीं।"

"तब ?"

"तब क्या ? मेरे लड़के-बच्चे हैं। मेरा दान ले

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

लिया जाय।"

उन भाई ने दान-पत्र भरा। उसपर रामचरन का अंगूठा लगवाकर उनसे कहा, अब आराम करो। सबेरे चले जाना। वह बोले, "नहीं, ठंड-ठंड में अभी निकल जाऊंगा। तीन कोस तो कुल है ही!"

सुबह उठकर बिनोबा को बताया गया कि रात को एक अंधा आदमी आया था। विनोबा ने कहा, "रामचरन अंधा नहीं है। अंधे तो हम-आप हैं, जो अपना धर्म नहीं पहचानते। मुझे तो उस भक्त के रूप में राम के चरण ही आशीर्वाद देने आये थे।"

... ...

"आप हमें कितनी जमीन देंगे?"—एक राजा से विनोबा ने कहा।

"जितनी आप कहेंगे, उतनी। हमारा तो तरीका है कि जो जितना मांगता है, उतना दे देते हैं। एक भाई आये, इक्कीस एकड़ ले गये। दूसरे भाई आये, हजार एकड़ ले गये।"

"अच्छा यह आपका निश्चय है।"

"जीहां।"

"तो हमें यह बताइये कि आपके पास जमीन है कितनी?"

"एक लाख एकड़ पड़ती और बारह सौ एकड़ काश्त की जमीन है।"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

"हम चाहते हैं कि अपनी कुल-की-कुल पड़ती जमीन हमें दे दें और काश्त में से छठा हिस्सा।"

"मंजूर। एक लाख एकड़ पड़ती और दो सौ एकड़ खेती की जमीन आपको समर्पित।"

... ...

एक बहुत बड़े जमींदार विनोबा के पास पहुंचे। कहने लगे, "बाबा, आजकल आप हमारे जिले में घूम रहे हैं। यहां आपने दूसरी जगह से कुछ अन्तर देखा?"

"क्या?"

"हमारे यहां की जमीन बहुत उपजाऊ है। इसमें तम्बाकू पैदा होता है। इसलिए इसके दाम चार हजार, पांच हजार रुपये एकड़ तक जाते हैं।"

"अच्छा, ऐसा कीजिये कि एक गड्ढा खोदिये।" विनोबा ने कहा, "फिर उसमें अपना चार हजार, पांच-हजार रुपया डालिये। चाहे नोट डालिये, चाहे सिक्का! ऊपर से पानी दीजिये। देखें, कितनी फसल पैदा होती है?"

वह बोले, "बाबा, मैं आपका मतलब नहीं समझा।"

विनोबा ने कहा, "हम आपसे यह समझना चाहते हैं कि भला जमीन का रुपये से कोई वास्ता है?"

जमींदार साहब असमंजस में पड़े। कुछ देर बाद बोले, "आखिर, जमीन की कीमत तो..."

"जमीन की कीमत! जिसे आप माता कहते हैं,

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

उसकी इज्जत के दाम लगाते हैं ? इससे बढ़कर ज्यादती क्या होगी ?"

"लेकिन जमीन के मालिक तो हम हैं।"

"मालिक आप हैं ! जमीन को 'विष्णुपत्नी' कहा गया है। सिवाय ईश्वर के उसका कौन मालिक हो सकता है ? अगर आप मालिक हैं तो मैं देखूं, अपने साथ आप कितनी जमीन ले जाते हैं ?"

"आपके विचार से कौन मालिक है ?"

"मालिक ईश्वर है, या ईश्वर की तरफ से गांव है। गांव की जमीन--न मेरी, न तेरी, न किसीकी। प्रेम से उसका आपस में बंटवारा होना चाहिए।"

"ठीक है आपकी बात। मैं समझ गया। अबतक हम लोग अंधकार में थे। आप सच कह रहे हैं--जबतक जमीन की निजी मालकियत रहेगी, तबतक न पैदावार बढ़ेगी, न देश का भला होगा।"

... ...

कुछ ईसाई विनोबा से मिलने आये। बातचीत होने लगी। थोड़ी देर बाद उनमें से एक ने कहा, "बाबा जी ! आपकी बात हम समझ गये। आप जमीन की निजी मालकियत को पाप मानते हैं।"

"जीहां !"

"लेकिन, बाइबिल में इस स्वामित्व को अपना पवित्र अधिकार कहा गया है। आप कहते हैं, उसे

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

छोड़ दो। क्या यह धर्म के विरुद्ध न होगा।"

"धर्म के विरुद्ध तो तब होता जब मैं जबरदस्ती से या डरा-धमकाकर आपकी चीज छीनता। लेकिन

विनोबा और ईसाइयों में बातें हुईं।

मैं तो यह कह रहा हूं कि अपनी खुशी से आप ही स्वामित्व छोड़ दीजिये। क्या आप स्वामित्व-विसर्जन को स्वामित्व से बढ़कर धर्म नहीं कहेंगे ?"

... ...

"आजकल जब रेल, हवाई जहाज आदि के साधन मौजूद हैं तो आपका पैदल चलना मेरी समझ में नहीं आता।" एक नौजवान ने विनोबा से कहा।

"तुम्हारा सवाल ठीक है। लेकिन हमें जमीन

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

चाहिए, इसलिए जमीन पर चलते हैं। हवा की जरूरत होती तो हवाई जहाज में उड़ते फिरते।"

नौजवान हँस पड़ा। बोला, "यह तो ठीक है, लेकिन पैदल ही क्यों ?"

"इसके तीन मुख्य कारण हैं। उनमें एक तो यह कि पैदल चलने के माने हैं कि हम अपने समय के मालिक हैं, किसी दूसरे के मुहताज नहीं हैं और दूर-से-दूर गांव में पहुंच सकते हैं।"

"हां, सब गांवों में सवारी नहीं जाती।"

"यह बात। दूसरे यह कि आसमान के नीचे खुली हवा में घूमने से ताजे-ताजे नये-नये विचार आते हैं और चित्त में सदा आनन्द रहता है। तीसरे, हमें लोक-शक्ति की खोज करनी है, जिसके द्वारा अहिंसा और शान्ति से अपनी समस्याएं हल करने का उपाय हमारे हाथ आयगा। यह तो आप कबूल करेंगे कि पदयात्रा से जितना लोक-सम्पर्क होता है, उतना किसी दूसरी तरह नहीं।"

"आपकी बात ठीक है। आज लोकशक्ति जाग्रत कर उसके सही संगठन की बड़ी जरूरत है।"

"यही तो मैं कर रहा हूं।"

... ...

आज के जमाने में सियासत का बोलबाला है, लेकिन आप कहते हैं कि सियासत से अब हमारा काम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

नहीं चलेगा।"

"जीहां, सियासत और मजहब, दोनों ही बेकार साबित होनेवाले हैं। इनका दौर तभी तक था, जब ये इन्सान से इन्सान को जोड़ने का काम करते थे। आज तो तोड़ने का काम करते हैं।"

"यह जरूर है। आज की सियासत माने रंजिश, कलह, दुश्मनी!"

"आप देखिए, जो पैसिफिक महासागर एशिया को अमरीका से अलग करता था, वही आज उसे जोड़ने-वाला बना है। आज के विज्ञान का तकाजा है कि जो चीज एक को दूसरे से तोड़ेगी या काटेगी, वह नहीं रहेगी।"

"तो सियासत की कोई जगह ही नहीं।"

"जी नहीं। मैंने तो सूत्र बनाया है—

विज्ञान+सियासत = सर्वनाश

विज्ञान+रूहानियत=सर्वोदय

अब इस देश और दुनिया के मसले सियासत से नहीं, रूहानियत से हल होंगे।"

रूहानियत से तो मतलब फिर वही मजहब से।"

"रूहानियत का मतलब है मजहब के अन्दर का गूदा, जो सब मजहबों में एक-सा है।"

"जरा और साफ-साफ बतलाइये।"

"देखो, पुराना मजहब कहता था कि ईश्वर एक

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: N

है, अल्लाह एक है। लेकिन ईश्वर के एक होने पर भी, इन्सान-इन्सान में झगड़े-फसाद,लड़ाइयां हुईं। रूहानियत कहती हैं कि इन्सान एक है और इन्सान-इन्सान के बीच की सारी दीवारें मिटनी चाहिए। जो-जो चीजें इन दीवारों को कायम रखती हैं, वे भी खत्म होनी चाहिए।"

"ऐसा होजाय तब तो कहना ही क्या ?"

"यह जरूर होगा, जमाने की मांग जो है।"

... ...

एक गांव का ग्रामदान होगया। वहां के सभी भूमिवानों ने अपनी सारी जमीन दान में दे दी। वहां न कोई भूमि का मालिक रहा, न कोई भूमि-हीन।

"आज तो जमीन दे दी; लेकिन कल किसीने कुछ कहा तो जमीन लोगे ?" विनोबा ने कहा।

"जी नहीं ऐसा नहीं हो सकता।

"ग्रामदान किसलिए दिया ?"

"सुखी होने के लिए।"

साहूकार आपको सतायेंगे तो क्या करोगे ?"

"हम सब एक होगये हैं। अब डर किस बात का ?"

"अबतक तुममें से आधे (भूमिवाले) खाते थे और आधे (बेजमीन) भूखे रहते थे। लेकिन अब सबके ऊपर मुसीबत एक साथ आयगी।"

"आयगी तो साथ-साथ उसका सामना करेंगे। हम

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

अब जियेंगे तो एक साथ जियेंगे, मरेंगे तो एक साथ मरेंगे।"

... ...

चार-चार की कतार। सबसे आगे विनोबा। उनके बाद कोई साठ बहनें। उनके पीछे आठसौ के ऊपर भाई। कदम मिलाती हुई यह सेना चली जा रही थी। अजमेर से कूच शुरू हुआ और साढ़े दस मील चलकर गगवाना पर खत्म।

वहां चंद्राकार शक्ल में सब शान्ति-सैनिक जमा होगये। उनके बीच एक मेज पर विनोबा खड़े होगये।

उन्होंने हाथ जोड़कर सबको प्रणाम किया। फिर आंखें मीच ली। कुछ कहना चाहते थे, मगर गला भर आया। आंखों से आंसुओं की धारा बह चली। कई मिनट तक चुप खड़े रहे। फिर एक बार हाथ जोड़कर प्रणाम किया और नीचे उतर आये।

इस तरह शान्ति-सेना का श्रीगणेश हुआ।

... ...

"सर्वोदय के लिए हम क्या कर सकते हैं?" घर-गिरस्तीवाले एक आदमी ने पूछा।

"पड़ोसी को खिलाकर खायं।"

"यह कैसे हो?"

"अपने घर में एक पात्र रखिये। उसमें घर का सबसे छोटा बालक एक मुट्ठी अन्न रोज सबेरे डाला

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

सर्वोदय-पात्र में घर का सबसे छोटा बच्चा रोज एक मुट्ठी अन्न डाले।

करे। पहले उस पात्र में अनाज पड़े, फिर भोजन हो।"

"यह सर्वोदय-पात्र तो प्रतीक रूप में हुआ।"

"जीहां, यह मेरी कम-से-कम मांग है। देश के हर घर में सर्वोदय-पात्र होना चाहिए।"

... ...

एक बार विनोबाजी को स्कूल के बहुत-से बच्चे खड़े मिले। उन्होंने जोरों से स्वागत में कहा, "जय-हिन्द!"

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

विनोबा ठहर गए। बोले, "एक बात बताओगे।"

"पूछिये।"

"जयहिन्द के माने क्या समझते हो?"

"अपने देश की जय हो, उसका भला हो।"

"और दूसरे देश का क्या हो?"

सब चुप। थोड़ी देर बाद एक लड़का बोला, "उसका भी भला हो।"

"ठीक? लेकिन 'जयहिन्द' में वह बात कहां आती है? तुम 'जयहिन्द' कहो, चीनवाले 'जय चीन' कहें, रूसवाले 'जय रूस' कहें, अमरीकावाले 'जय अमरीका' कहें, तो आपस में प्रेम-भाव बढ़ेगा?"

"नहीं बढ़ेगा। अपना-अपना लोभ बढ़ेगा?"

"तो यह तो ठीक नहीं है न? हमें ऐसा मंत्र बोलना चाहिए, जिससे सारी दुनिया में मेल-मुहब्बत पैदा हो। वह मंत्र है—"जय जगत!"

सब बालकों ने ऊंची आवाज में कहा, "जय जगत!"

विनोबा ने उनको प्रणाम किया और आगे बढ़ गये।

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

Nepal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu

. In Public Domain. Digitization by eGangotri.Funding: M

समाज-विकास-माला की पुस्तकें

१. बदरीनाथ
२. बंगल की मैर
३. भीष्म पितामह
४. शिवि और दधीचि
५. विनोबा और भूदान
६. कबीर के दोहे
७. गांधीजी का विद्यार्थी-जीवन
८. गंगाजी
९. गौतम बुद्ध
१०. गांव सुखी, हम सुखी
११. निषाद और शबरी
१२. कितनी ज़मीन ?
१३. ऐसे थे सरदार
१४. चैतन्य महाप्रभु
१५. कहावतों की कहानियां
१६. सरल व्यायाम
१७. द्वारका
१८. बापू की बातें
१९. बाहुबली और नेमिनाथ
२०. तंदुरस्ती हजार नियामत
२१. बीमारी कैसे दूर करें ?
२२. माटी की मूरत जागी
२३. गिरिधर की कुंडलियां
२४. रहीम के दोहे
२५. गीता-प्रवेशिका
२६. तुलसी-मानस-मोती
२७. दादू की वाणी
२८. नजीर की नज्में
२९. संत तुकाराम
३०. हजरत उमर
३१. बाजीप्रभु देशपांडे
३२. तिरुवल्लुवर
३३ कस्तूरबा गांधी
३४ शहद की खेती
३५. कावेरी
३६. तीर्थराज प्रयाग
३७. तेल की कहानी
३८. हम सुखी कैसे रहें ?
३९ गो-सेवा क्यों ?
४०. कैलास-मानसरोवर
४१. अच्छा किया या बुरा ?
४२. नरसी मेहता
४३. पंढरपुर
४४. ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती
४५. संत ज्ञानेश्वर
४६. धरती की कहानी
४७. राजा भोज
४८. ईश्वर का मंदिर
४९. गांधीजी का संसार-प्रवेश
५०. ये थे नेताजी
५१. रामेश्वरम्
५२. कव्वों का विलाप
५३. रामकृष्ण परमहंस
५४. समर्थ रामदास
५५. मीरा के पद
५६. मिल-जुलकर काम करो
५७. कालापानी
५८. पावभर आटा
५९. सवेरे की रोशनी
६०. भगवान के प्यारे
६१. हातिम-अल-रशीद
६२. तीर्थंकर महावीर
६३. हमारे पड़ोसी
६४. आकाश की बातें
६५. मच्छा तीरथ
६६. हाजिर-जवाबी
६७. सिंहासन-बत्तीसी भाग १
६८. सिंहासन-बत्तीसी भाग २
६९. नेहरूजी का विद्यार्थी-जीवन
७०. सूरसराज
७१. नाना
७२. गुरु नानक
७३. हमारा संविधान
७४. राजेंद्रबाबू का बचपन
७५. परमहंस की कहानि
७६. सोने का कंगन
७७. झांसी की रानी
७८. हुआ सवेरा
७९. बीरबल की बातें
८०. मन के जीते जीत
८१. मुरब्बी
८२. हरिद्वार
८३. सागर की सैर
८४. प्राणवान के रखवारे
८५. महामना मालवीय
८६. भर्तृहरि
८७. देवताओं का प्यारा
८८. देश यों आगे बढ़ेगा
८९. हमारे मुस्लिम संत
९०. नन्हा श्रवणकोल
९१. स्वामी विवेकानंद
९२. आप भला, जग भला
९३. नासिक
९४. सूर के पद
९५. संत वेमन्ना
९६. आराम हराम है
९७. गोरा-बादल
९८. पाटलिपुत्र
९९. महर्षि अगस्त्य
१००. दानवीर कर्ण
१०१. शेख सादी
१०२. गोदावरी
१०३. कुम्हार की बेटी
१०४. नर्मदा
१०५. शंकराचार्य
१०६ भगीरथ
१०७
१०८
१०९
११०. मंगू भैया

मूल्य : प्रत्येक [illegible] ४० [illegible]

४० [illegible] नये

epal Sanskrit University, Balmeeki Campus, Kathmandu